Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: City Bhaskar
Date: 31 July 2025
Edition: Ahmedabad
Page: 01

દિવ્ય ભાસ્કર અમદાવાદ-સિટીભાસ્કર 31-07-2025

PROUD MOMENT લુપ્ત કલાને જીવિત કરાઈ

EDIIની પહેલને GI એક્સેલન્સ એવોર્ડ

'હસ્તકલા સેતુ'યોજનાને એવોર્ડ

ગાંધીનગર: ગુજરાત સરકારના કુટીર અને ગ્રામીણ ઉદ્યોગના કમિશનરેટ અને EDIIની 'હસ્તકલા સેતુ' યોજનાને 'GI એક્સેલન્સ એવોર્ડ: ગુજરાત ચેપ્ટર' એનાયત થયો. હસ્તકલાને પ્રોત્સાહન આપવા અને GIમાં ઉત્કૃષ્ટતા બદલ આ એવોર્ડ મળ્યો છે.

એવોર્ડ 'આર્થિક વિકાસ, સાંસ્કૃતિક સંરક્ષણ અને વૈશ્વિક માન્યતા માટે GIનો લાભ લેવો' ટાઈટલ અંતર્ગત આયોજિત કોન્ફરન્સમાં અપાયો હતો. આ પ્રોજેક્ટે આર્થિક પરિણામો ઉપરાંત, યુથમાં પરંપરાગત હસ્તકલામાં ફરી અવેરનેસ જાગૃત કરી, લુપ્ત થતી કલાને ફરી જીવિત કરી છે.

યોજના વિશે વિશેષ

સ્ટ્રક્ચર્ડ ટ્રેનિંગ, બ્રાન્ડિંગ સપોર્ટ, ડિજિટલ હેન્ડહોલ્ડિંગ સાથે EDIIએ 11હજારથી વધુ કારીગરોને ઈન્ફોર્મલ સેટઅપમાંથી ફોર્મલ એન્ટરપ્રાઈઝમાં ફેરવ્યાં છે. યોજનાની શરૂઆત સપ્ટેમ્બરમાં થઈ હતી. ત્યારથી, આ પ્રોજેક્ટ ગુજરાતના તમામ 33 જિલ્લાઓમાં વિસ્તર્યો છે, જેમાં 34,000થી વધુ કારીગરો જોડાયા છે. પહેલ હેઠળ, કારીગર ઈ-કોમર્સ પ્લેટફોર્મ પર જોડાયા છે.

Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: Amrit India
Date: 31 July 2025
Edition: Delhi
Page: 06

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

अहमदाबाद। हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड - गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अर्द्रा अग्रवाल ने कहा गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। हस्तकला सेतु योजना के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है। जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है।

हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों – विशेष रूप सेट ईडीआईआई – की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।

ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है।

Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: Vir Arjun
Date: 31 July 2025
Edition: Delhi
Page: 11

हस्तकला सेतु योजना को जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

अहमदाबाद, (वीअ)। हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान , अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड - गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: Dainik Savera Times
Date: 31 July 2025
Edition: Delhi
Page: 15

हस्तकला सेतु योजना को जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड

सवेरा न्यूज/ कास.

नई दिल्ली, 30 जुलाई : गुजरात सरकार की हस्तकला सेतु योजना को 'जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। इस योजना को कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय द्वारा प्रारंभ किया गया और ईडीआईआई द्वारा संचालित किया जा रहा है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार, जीआई टैगिंग और शिल्पकारों को सशक्त बनाने में उत्कृष्ट योगदान के लिए मिला।

योजना के तहत अब तक 34 हजार से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाकर उन्हें डिजाइन, ब्रांडिंग और डिजिटल मार्केटिंग जैसे क्षेत्रों में सहयोग दिया गया है। यह पुरस्कार 18 जुलाई को आयोजित एक जीआई सम्मेलन में प्रदान किया गया।

Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: Badri Vishal
Date: 31 July 2025
Edition: Dehradun
Page: 06

हस्तकला सेतु योजना को प्रचार और टैगिंग के लिए जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

देहरादून। हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'जी आई एक्सीलेंस अवॉर्ड गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आई टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रुप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है।

Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: Devpath
Date: 31 July 2025
Edition: Dehradun
Page: 04

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए जी आईएक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

देहरादून (नि०स०)। हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान ,अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को जी आई एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैप्टर 'से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार–प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आई टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई **2025** को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: Jan Bharat Mail
Date: 31 July 2025
Edition: Dehradun
Page: 06

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए जी आई एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

देहरादून, संवाददाता। हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान , अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को ' जी आई एक्सीलेंस अवॉर्ड-गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है।

यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आई टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते

हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है।

संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रुप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें। इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अर्द्रा अग्रवाल (IAS) ने कहा गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं।

हस्तकला सेतु योजना के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है। जी आई एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है।

हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों – विशेष रूप से ईडीआईआई – की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा- हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह योजना उन्हें केवल कौशल नहीं देती, बल्कि यह भी सिखाती है कि अपनी विरासत को कैसे संरक्षित करें, उद्यमिता कौशलों का उपयोग कैसे करें, डिजिटल टूल्स कैसे अपनाएं, और एक सफल उद्यमी के रूप में कैसे आगे बढ़ें।

Publication: Veer Arjun
Date: 31 July 2025
Edition: Dehradun
Page: 06

हस्तकला सेतु योजना को प्रचार और टैगिंग के लिए जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

वीर अर्जुन संवाददाता

देहरादून। हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को ' जी आई एक्सीलेंस अवॉर्ड गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आई टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रुप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें। इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त अर्द्रा अग्रवाल ने कहा: ठ्रुड्डह्लद्व की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं।

Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: Sandesh
Date: 30 July 2025
Edition: Online
Link: https://sandesh.com/gujarat/news/ahmedabad/gujarat-news-hastaka-setu-yojana-honored-with-gi-excellence-award

ગુજરાત સરકારના કુટીર અને ગ્રામીણ ઉદ્યોગના કમિશનરેટની પહેલ અને એન્ટરપ્રેન્યોરશિપ ડેવલપમેન્ટ ઇન્સ્ટિટ્યૂટ ઓફ ઇન્ડિયા અમદાવાદ દ્વારા અમલમાં મુકાયેલી હસ્તકલા સેતુ યોજનાને હસ્તકલાને પ્રોત્સાહન આપવા બદલ અને જિઓગ્રાફિકલ ટેગિંગમાં ઉત્કૃષ્ટતા બદલ 'GI એક્સેલન્સ એવોર્ડ - ગુજરાત ચેપ્ટર'થી સન્માનિત કરવામાં આવી છે.આ પુરસ્કાર 18 જુલાઇ 2025 ના રોજ બૌદ્ધિક સંપદા પ્રતિભા શોધ પરીક્ષા અને ગુજરાત નેશનલ લો યુનિવર્સિટી દ્વારા 'આર્થિક વિકાસ, સાંસ્કૃતિક સંરક્ષણ અને વૈશ્વિક માન્યતા માટે GIનો લાભ લેવો આયોજિત કોન્ફરન્સ દરમિયાન આપવામાં આવ્યો હતો.

આ પ્રોજેક્ટ 33 જિલ્લાઓમાં કાર્યરત

સપ્ટેમ્બર 2020માં છ જિલ્લાઓમાં તેની શરૂઆત થઇ ત્યારથી આ પ્રોજેક્ટ 34,000થી વધુ કારીગરો સુધી પહોંચવાની સાથે ગુજરાતના તમામ 33 જિલ્લાઓમાં કાર્યરત છે. સંરચિત ટ્રેનિંગ મોડ્યુલ ડિઝાઇનમાં સુધારો કરવા માટેના પગલાંઓ બ્રાન્ડિંગ સંબંધિત માર્ગદર્શન અને ડિજિટલ માર્કેટિંગ હેન્ડહોલ્ડિંગ દ્વારા, EDII એ 11000થી વધુ કારીગરોને તેમનો શોખને વેપારમાં બદલવામાં મદદ કરી છે.વધતી જતી સંખ્યામાં કારીગરોને જિઓગ્રાફિકલ ઇન્ડિકેશન (GI)ના માળખા હેઠળ તેમના ઉત્પાદનોની નોંધણી કરવામાં પણ મદદ કરવામાં આવી છે. જેનાથી તેઓ તેમની પરંપરાગત હસ્તકલાનું સાંસ્કૃતિક અને આર્થિક મૂલ્ય મેળવી શકે અને તેનું રક્ષણ કરી શકે છે.

GI એક્સેલન્સ એવોર્ડ એક ગર્વની ક્ષણ છે

આ ઉપલબ્ધિ પર વાત કરતા ગુજરાત સરકારના કોટેજ અને ગ્રામીણ ઉદ્યોગના સચિવ અને કમિશનર આર્દ્રા અગ્રવાલ (IAS)એ કહ્યું,"ગુજરાતની પરંપરાગત હસ્તકલા આપણા લોકો અને સમુદાયોની ઓળખમાં ઊંડા મૂળ ધરાવે છે.હસ્તકલા સેતુ યોજના દ્વારા,અમે આ પરંપરાઓનું સંરક્ષણ કરવાની સાથે આજના વિકસતા બજારોમાં કારીગરોને આગળ આવવા માટે પણ સક્ષમ બનાવવાનો પ્રયાસ કર્યો છે.GI એક્સેલન્સ એવોર્ડ એક ગર્વની ક્ષણ છે.તે કારીગર-સંચાલિત વિકાસ પ્રત્યે સરકારની પ્રતિબદ્ધતાની પુષ્ટિ કરે છે.અમે કારીગરો, માર્ગદર્શકો અને EDII જેવા ભાગીદારોની,અમારા સપનાને સાકાર કરવામાં અમારી મદદ કરવા બદલ પ્રશંસા કરીએ છીએ.

આ સફર પર ચાલીને ગર્વ અનુભવીએ છીએ

EDII ના ડાયરેક્ટર જનરલ ડૉ.સુનિલ શુક્લાએ જણાવ્યું હતું કે, "હસ્તકલા સેતુ યોજના કારીગરોના વાસ્તવિક જીવન સાથે તેના મજબૂત જોડાણના કારણે તેમના જીવનમાં ફરક લઇ આવે છે. તે તેમને માત્ર તેમની કુશળતા સુધારવામાં જ નહીં, પણ તેમના વારસાનું સંરક્ષણ કેવી રીતે કરવું, ઉદ્યોગસાહસિક ક્ષમતાઓ અને ડિજિટલ સાધનોનો ઉપયોગ કેવી રીતે કરવો અને એક વેપારી તરીકે વિકાસ કેવી રીતે કરવો તે સમજવામાં પણ મદદ કરે છે.EDII ખાતરી કરીને કે આ કારીગરો ફક્ત તેમની કારીગરીનું રક્ષણ જ નહીં પરંતુ ઉજ્જવળ ભવિષ્યનું નિર્માણ પણ કરે, અમને તેમની સાથે આ સફર પર ચાલીને ગર્વ અનુભવીએ છીએ.

કારીગરોની આવક અને આજીવિકામાં સ્પષ્ટ સુધારો દર્શાવે છે

આ પ્રોજેક્ટનો GI ઘટક સ્થાનિક અને વૈશ્વિક બજારોમાં ટાંગાલિયા, રોગન કલા, કચ્છ ભરતકામ અને માતા ની પચેડી જેવી સ્થાનિક હસ્તકલાનું સંરક્ષણ કરવા અને ઉચ્ચ-મૂલ્યવાળી ચીજવસ્તુઓ તરીકે ઓળખ આપવામાં ખુબ જ અસરકારક રહ્યો છે.આ પ્રોજેક્ટ ઇ-કોમર્સ ઓનબોર્ડિંગ, એક્સહિબીશન અને કારીગરો માટે તૈયાર કરાયેલા વિશિષ્ટ પ્લેટફોર્મ દ્વારા બજાર સુધી પહોંચવામાં મદદ કરે છે. પરિણામે, સમર્થિત કારીગરોએ સામૂહિક રીતે ₹100.10 કરોડથી વધુની આવક ઉભી કરી છે, જે કારીગરોની આવક અને આજીવિકામાં સ્પષ્ટ સુધારો દર્શાવે છે.

Entrepreneurship Development Institute of India
Ahmedabad

Publication: Navjeevan Express
Date: 31 July 2025
Edition: Online
Link: https://navjeevanexpress.com/hastkala-setu-yojana-wins-gi-excellence-award-gujarat-chapter-for-promotion-of-handicrafts/

- **Since its inception in September 2020 across six districts, the project has steadily scaled up to cover all 33 districts of Gujarat, reaching over 34,000 artisans**
- **The GI component of the project has been particularly impactful in repositioning local crafts such as Tangaliya, Rogan art, Kutch embroidery, and Mata ni Pachedi as protected, high-value commodities in both domestic and global markets**

NE FEATURES BUREAU

AHMEDABAD, JULY 30

Hastkala Setu Yojana, an initiative of the Commissionerate of Cottage and Rural Industries (CCRI), Government of Gujarat, and implemented by the **Entrepreneurship Development Institute of India (EDII)**, Ahmedabad, has been conferred with the '**GI Excellence Award – Gujarat Chapter'** for Excellence in Promotion and Geographical Indication (GI) Tagging of Handicrafts. The award was conferred during the Conference – 'Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition' held on 18th July 2025, organised by the Intellectual Property Talent Search Examination and the Gujarat National Law University.

This recognition highlights the project's ongoing commitment to preserving Gujarat's traditional crafts, supporting artisans in building sustainable livelihoods, and helping them protect their unique skills while finding new opportunities in today's evolving markets.

Developed as a comprehensive programme to revive the handloom and handicraft sectors of Gujarat, Hastkala Setu Yojana has been instrumental in developing an entrepreneurial ecosystem to strengthen rural and cottage industries of Gujarat. In addition, it has actively worked towards bridging skill, design, and market linkages for rural artisans.

Since its inception in September 2020 across six districts, the project has steadily scaled up to cover all 33 districts of Gujarat, reaching over 34,000 artisans. Through structured training modules, design interventions, branding guidance, and digital marketing handholding, EDII has helped over 11,000 artisans transition from informal setups to formalised enterprises. A growing number of artisans have also been supported in registering their products under the Geographical Indication (GI) framework, enabling them to claim and protect the cultural and economic value of their traditional crafts.

Speaking on the achievement, **Ardra Agarwal (IAS), Secretary & Commissioner, Cottage & Rural Industries, Government of Gujarat, said**, "The traditional crafts of Gujarat are deeply woven into the identity of our people and communities. Through Hastkala Setu Yojana, we have not only sought to preserve these traditions but also to enable artisans to thrive in today's dynamic markets. The GI Excellence Award is a proud moment; it validates the government's commitment to artisan-led development. We commend the artisans, mentors, and partners like EDII who are taking our vision forward with dedication."

Dr. Sunil Shukla, Director General, EDII, Said, "What makes Hastkala Setu Yojana truly impactful is its strong connection with the ground realities of artisans. It supports them not just with skills but also helps them understand how to preserve their heritage, employ entrepreneurial competencies, use digital tools, and grow as entrepreneurs. Geographical Indications play a big role in giving their work the identity and respect it deserves in the market. At EDII, we are proud to walk this journey with these artisans, ensuring they not only protect their craft but also build a sustainable future. This award encourages us to take this model to even more communities."

The GI component of the project has been particularly impactful in repositioning local crafts such as Tangaliya, Rogan art, Kutch embroidery, and Mata ni Pachedi as protected, high-value commodities in both domestic and global markets. The project facilitates market outreach through e-commerce onboarding, exhibitions, and exclusive platforms tailored for artisans. As a result, supported artisans have collectively generated revenues exceeding ₹100.10 crore, marking a visible improvement in artisans' incomes and livelihoods

Hastkala Setu Yojana has helped bring back traditional crafts that were slowly fading, inspired young people to take pride in their heritage, and positioned Gujarat as a frontrunner in supporting artisans through thoughtful policies and innovation. With focused support on the ground, the project is showing how cultural heritage can be a source of dignity, pride, and sustainable livelihoods for thousands of artisans.

Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: khabarpatri
Date: 31 July 2025
Edition: Online
Link: https://khabarpatri.com/hastakala-setu-yojana-received-gi-excellence-award-for-promoting-handicrafts-and-tagging-gujarat-chapter/

અમદાવાદ: ગુજરાત સરકારના કુટીર અને ગ્રામીણ ઉદ્યોગના કમિશનરેટ (CCRI) ની પહેલ અને એન્ટરપ્રેન્યોરશિપ ડેવલપમેન્ટ ઇન્સ્ટિટ્યૂટ ઓફ ઇન્ડિયા (ઇડીઆઇઆઇ), અમદાવાદ દ્વારા અમલમાં મુકાયેલી હસ્તકલા સેતુ યોજનાને હસ્તકલાને પ્રોત્સાહન આપવા બદલ અને જિઓગ્રાફિકલ (GI) ટેગિંગમાં ઉત્કૃષ્ટતા બદલ એક્સેલન્સ એવોર્ડ – ગુજરાત ચેપ્ટરથી સન્માનિત કરવામાં આવી છે. આ પુરસ્કાર 18 જુલાઈ 2025 ના રોજ બૌદ્ધિક સંપદા પ્રતિભા શોધ પરીક્ષા અને ગુજરાત નેશનલ લો યુનિવર્સિટી દ્વારા આર્થિક વિકાસ, સાંસ્કૃતિક સંરક્ષણ અને વૈશ્વિક માન્યતા માટે GIનો લાભ લેવો' આયોજિત કોન્ફરન્સ દરમિયાન આપવામાં આવ્યો હતો.

આ સન્માન ગુજરાતની પરંપરાગત હસ્તકલાનું સંરક્ષણ કરવા, લાંબા ગાળા માટે આજીવિકા મેળવવા માટે કારીગરોને સમર્થન આપવા અને આજના વિકસતા બજારોમાં નવી તકો શોધવાની સાથે તેમની અનન્ય કુશળતાને સુરક્ષિત રાખવામાં મદદ કરવા માટે પ્રોજેક્ટની વર્તમાન પ્રતિબદ્ધતાને પ્રકાશિત કરે છે.

ગુજરાતના હેન્ડલુમ અને હાન્ડીક્રાફ્ટ ક્ષેત્રોને પુનર્જીવિત કરવા માટે એક વ્યાપક કાર્યક્રમ તરીકે અમલમાં મુકવામાં આવેલ હસ્તકલા સેતુ યોજના, ગુજરાતના ગ્રામીણ અને કુટીર ઉદ્યોગોને મજબૂત બનાવવા માટે એક ઉદ્યોગસાહસિક સમુદાય વિકસાવવામાં મહત્વપૂર્ણ ભૂમિકા ભજવી રહી છે. વધુમાં, તે ગ્રામીણ કારીગરો માટે કુશળતા, ડિઝાઇન અને બજાર સાથે જોડાણ સ્થાપિત કરવા માટે સક્રિયપણે કામ કરી રહી છે.

સપ્ટેમ્બર 2020માં છ જિલ્લાઓમાં તેની શરૂઆત થઈ ત્યારથી, આ પ્રોજેક્ટ 34,000 થી વધુ કારીગરો સુધી પહોંચવાની સાથે ગુજરાતના તમામ 33 જિલ્લાઓમાં કાર્યરત છે. સંરચિત ટ્રેનિંગ મોડ્યુલ, ડિઝાઇનમાં સુધારો કરવા માટેના પગલાંઓ, બ્રાન્ડિંગ સંબંધિત માર્ગદર્શન અને ડિજિટલ માર્કેટિંગ હેન્ડહોલ્ડિંગ દ્વારા, EDII એ 11,000 થી વધુ કારીગરોને તેમનો શોખને વેપારમાં બદલવામાં મદદ કરી છે. વધતી જતી સંખ્યામાં
કારીગરોને જિઓગ્રાફિકલ ઇન્ડિકેશન (GI) ના માળખા હેઠળ તેમના ઉત્પાદનોની નોંધણી કરવામાં પણ મદદ કરવામાં આવી છે, જેનાથી તેઓ તેમની પરંપરાગત હસ્તકલાનું સાંસ્કૃતિક અને આર્થિક મૂલ્ય મેળવી શકે અને તેનું રક્ષણ કરી શકે છે.

આ ઉપલબ્ધિ પર વાત કરતા, ગુજરાત સરકારના કોટેજ અને ગ્રામીણ ઉદ્યોગના સચિવ અને કમિશનર શ્રીમતી આર્દ્રા અગ્રવાલ (IAS) એ કહ્યું, ગુજરાતની પરંપરાગત હસ્તકલા આપણા લોકો અને સમુદાયોની ઓળખમાં ઊંડા મૂળ ધરાવે છે. હસ્તકલા સેતુ યોજના દ્વારા, અમે આ પરંપરાઓનું સંરક્ષણ કરવાની સાથે આજના વિકસતા બજારોમાં કારીગરોને આગળ આવવા માટે પણ સક્ષમ બનાવવાનો પ્રયાસ કર્યો છે. GI
એક્સેલન્સ એવોર્ડ એક ગર્વની ક્ષણ છે; તે કારીગર-સંચાલિત વિકાસ પ્રત્યે સરકારની પ્રતિબદ્ધતાની પુષ્ટિ કરે છે. અમે કારીગરો, માર્ગદર્શકો અને EDII જેવા ભાગીદારોની, અમારા સપનાને સાકાર કરવામાં અમારી મદદ કરવા બદલ પ્રશંસા કરીએ છીએ.

EDII ના ડાયરેક્ટર જનરલ ડૉ. સુનિલ શુક્લાએ જણાવ્યું હતું કે, "હસ્તકલા સેતુ યોજના કારીગરોના વાસ્તવિક જીવન સાથે તેના મજબૂત જોડાણના કારણે તેમના જીવનમાં ફરક લઇ આવે છે. તે તેમને માત્ર તેમની કુશળતા સુધારવામાં જ નહીં, પણ તેમના વારસાનું સંરક્ષણ કેવી રીતે કરવું, ઉદ્યોગસાહસિક ક્ષમતાઓ અને ડિજિટલ સાધનોનો ઉપયોગ કેવી રીતે કરવો અને એક વેપારી તરીકે વિકાસ કેવી રીતે કરવો તે સમજવામાં પણ મદદ કરે છે. ભૌગોલિક સંકેતો તેમના કામને બજારમાં તે ઓળખ અને સન્માન આપવામાં મોટી ભૂમિકા ભજવે છે જે તેને મળવી જોઇએ. EDII ખાતરી કરીને કે આ કારીગરો ફક્ત તેમની કારીગરીનું રક્ષણ જ નહીં પરંતુ ઉજ્જવળ ભવિષ્યનું નિર્માણ પણ કરે, અમને તેમની સાથે આ સફર પર ચાલીને ગર્વ અનુભવીએ છીએ. આ પુરસ્કાર અમને આ મોડેલને વધુને વધુ લોકો સુધી લઇ જવા માટે પ્રોત્સાહિત કરે છે.

આ પ્રોજેક્ટનો GI ઘટક સ્થાનિક અને વૈશ્વિક બજારોમાં ટાંગાલિયા, રોગન કલા, કચ્છ ભરતકામ અને માતા ની પચેડી જેવી સ્થાનિક હસ્તકલાનું સંરક્ષણ કરવા અને ઉચ્ચ-મૂલ્યવાળી ચીજવસ્તુઓ તરીકે ઓળખ આપવામાં ખુબ જ અસરકારક રહ્યો છે. આ પ્રોજેક્ટ ઇ-કોમર્સ ઓનબોર્ડિંગ, એક્સહિબીશન અને કારીગરો માટે તૈયાર કરાયેલા વિશિષ્ટ પ્લેટફોર્મ દ્વારા બજાર સુધી પહોંચવામાં મદદ કરે છે. પરિણામે, સમર્થિત કારીગરોએ સામૂહિક રીતે ₹100.10 કરોડથી વધુની આવક ઉભી કરી છે, જે કારીગરોની આવક અને આજીવિકામાં સ્પષ્ટ સુધારો દર્શાવે છે.

હસ્તકલા સેતુ યોજનાએ ધીમે ધીમે લુપ્ત થતી પરંપરાગત હસ્તકલાને ફરી જીવિત કરવામાં મદદ કરી છે, યુવાનોને તેની સંસ્કૃતિ પર ગર્વ લેવા પ્રેરણા આપી છે, અને વિચારશીલ નીતિઓ અને નવીનતા દ્વારા કારીગરોને સમર્થન આપવામાં ગુજરાતને અગ્રેસર તરીકે સ્થાન આપ્યું છે. વાસ્તવિક જીવન પર કેન્દ્રિત સમર્થન સાથે, આ પ્રોજેક્ટ દર્શાવે છે કે સાંસ્કૃતિક વારસો હજારો કારીગરો માટે ગૌરવ, સન્માન અને લાંબા ગાળાની
આજીવિકાનો સ્ત્રોત કેવી રીતે બની શકે છે.

Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: Dailyhunt
Date: 31 July 2025
Edition: Online
Link: https://m.dailyhunt.in/news/india/gujarati/khabarpatri-epaper-kpatri/hastakalane+protsahan+aapava+badal+ane+teging+mate+hastakala+setu+yojanane+malyo+gi+eksel ans+evord+gujarat+cheptar-newsid-n674711274?sm=Y

હસ્તકલાને પ્રોત્સાહન આપવા બદલ અને ટેગિંગ માટે હસ્તકલા સેતુ યોજનાને મળ્યો GI એક્સેલન્સ એવોર્ડ - ગુજરાત ચેપ્ટર

19hr · 1 shares

અમદાવાદ: ગુજરાત સરકારના કુટીર અને ગ્રામીણ ઉદ્યોગના કમિશનરેટ (CCRI) ની પહેલ અને એન્ટરપ્રેન્યોરશિપ ડેવલપમેન્ટ ઇન્સ્ટિટ્યૂટ ઓફ ઇન્ડિયા (ઇડીઆઇઆઇ), અમદાવાદ દ્વારા અમલમાં મુકાયેલી હસ્તકલા સેતુ યોજનાને હસ્તકલાને પ્રોત્સાહન આપવા બદલ અને જિઓગ્રાફિકલ (GI) ટેગિંગમાં ઉત્કૃષ્ટતા બદલ એક્સેલન્સ એવોર્ડ - ગુજરાત ચેપ્ટરથી સન્માનિત કરવામાં આવી છે.

આ પુરસ્કાર 18 જુલાઇ 2025 ના રોજ બૌદ્ધિક સંપદા પ્રતિભા શોધ પરીક્ષા અને ગુજરાત નેશનલ લો યુનિવર્સિટી દ્વારા આર્થિક વિકાસ, સાંસ્કૃતિક સંરક્ષણ અને વૈશ્વિક માન્યતા માટે GIનો લાભ લેવો' આયોજિત કોન્ફરન્સ દરમિયાન આપવામાં આવ્યો હતો.

આ સન્માન ગુજરાતની પરંપરાગત હસ્તકલાનું સંરક્ષણ કરવા, લાંબા ગાળા માટે આજીવિકા મેળવવા માટે કારીગરોને સમર્થન આપવા અને આજના વિકસતા બજારોમાં નવી તકો શોધવાની સાથે તેમની અનન્ય કુશળતાને સુરક્ષિત રાખવામાં મદદ કરવા માટે પ્રોજેક્ટની વર્તમાન પ્રતિબદ્ધતાને પ્રકાશિત કરે છે. ગુજરાતના હેન્ડલુમ અને હાન્ડીક્રાફ્ટ ક્ષેત્રોને પુનર્જીવિત કરવા માટે એક વ્યાપક કાર્યક્રમ તરીકે અમલમાં મુકવામાં આવેલ હસ્તકલા સેતુ યોજના, ગુજરાતના ગ્રામીણ અને કુટીર ઉદ્યોગોને મજબૂત બનાવવા માટે એક ઉદ્યોગસાહસિક સમુદાય વિકસાવવામાં મહત્વપૂર્ણ ભૂમિકા ભજવી રહી છે. વધુમાં, તે ગ્રામીણ કારીગરો માટે કુશળતા, ડિઝાઇન અને બજાર સાથે જોડાણ સ્થાપિત કરવા માટે સક્રિયપણે કામ કરી રહી છે.

સપ્ટેમ્બર 2020માં છ જિલ્લાઓમાં તેની શરૂઆત થઈ ત્યારથી, આ પ્રોજેક્ટ 34,000 થી વધુ કારીગરો સુધી પહોંચવાની સાથે ગુજરાતના તમામ 33 જિલ્લાઓમાં કાર્યરત છે. સંરચિત ટ્રેનિંગ મોડ્યુલ, ડિઝાઇનમાં સુધારો કરવા માટેના પગલાંઓ, બ્રાન્ડિંગ સંબંધિત માર્ગદર્શન અને ડિજિટલ માર્કેટિંગ હેન્ડહોલ્ડિંગ દ્વારા, EDII એ 11,000 થી વધુ કારીગરોને તેમનો શોખને વેપારમાં બદલવામાં મદદ કરી છે. વધતી જતી સંખ્યામાં
કારીગરોને જિઓગ્રાફિકલ ઇન્ડિકેશન (GI) ના માળખા હેઠળ તેમના ઉત્પાદનોની નોંધણી કરવામાં પણ મદદ કરવામાં આવી છે, જેનાથી તેઓ તેમની પરંપરાગત હસ્તકલાનું સાંસ્કૃતિક અને આર્થિક મૂલ્ય મેળવી શકે અને તેનું રક્ષણ કરી શકે છે.

આ ઉપલબ્ધિ પર વાત કરતા, ગુજરાત સરકારના કોટેજ અને ગ્રામીણ ઉદ્યોગના સચિવ અને કમિશનર શ્રીમતી આર્દ્રા અગ્રવાલ (IAS) એ કહ્યું, ગુજરાતની પરંપરાગત હસ્તકલા આપણા લોકો અને સમુદાયોની ઓળખમાં ઊંડા મૂળ ધરાવે છે. હસ્તકલા સેતુ યોજના દ્વારા, અમે આ પરંપરાઓનું સંરક્ષણ કરવાની સાથે આજના વિકસતા બજારોમાં કારીગરોને આગળ આવવા માટે પણ સક્ષમ બનાવવાનો પ્રયાસ કર્યો છે. GI
એક્સેલન્સ એવોર્ડ એક ગર્વની ક્ષણ છે; તે કારીગર-સંચાલિત વિકાસ પ્રત્યે સરકારની પ્રતિબદ્ધતાની પુષ્ટિ કરે છે. અમે કારીગરો, માર્ગદર્શકો અને EDII જેવા ભાગીદારોની, અમારા સપનાને સાકાર કરવામાં અમારી મદદ કરવા બદલ પ્રશંસા કરીએ છીએ.

EDII ના ડાયરેક્ટર જનરલ ડૉ. સુનિલ શુક્લાએ જણાવ્યું હતું કે, "હસ્તકલા સેતુ યોજના કારીગરોના વાસ્તવિક જીવન સાથે તેના મજબૂત જોડાણના કારણે તેમના જીવનમાં ફરક લઇ આવે છે. તે તેમને માત્ર તેમની કુશળતા સુધારવામાં જ નહીં, પણ તેમના વારસાનું સંરક્ષણ કેવી રીતે કરવું, ઉદ્યોગસાહસિક ક્ષમતાઓ અને ડિજિટલ સાધનોનો ઉપયોગ કેવી રીતે કરવો અને એક વેપારી તરીકે વિકાસ કેવી રીતે કરવો તે સમજવામાં પણ મદદ કરે છે. ભૌગોલિક સંકેતો તેમના કામને બજારમાં તે ઓળખ અને સન્માન આપવામાં મોટી ભૂમિકા ભજવે છે જે તેને મળવી જોઇએ. EDII ખાતરી કરીને કે આ કારીગરો ફક્ત તેમની કારીગરીનું રક્ષણ જ નહીં પરંતુ ઉજ્જવળ ભવિષ્યનું નિર્માણ પણ કરે, અમને તેમની સાથે આ સફર પર ચાલીને ગર્વ અનુભવીએ છીએ. આ પુરસ્કાર અમને આ મોડેલને વધુને વધુ લોકો સુધી લઇ જવા માટે પ્રોત્સાહિત કરે છે.

આ પ્રોજેક્ટનો GI ઘટક સ્થાનિક અને વૈશ્વિક બજારોમાં ટાંગાલિયા, રોગન કલા કચ્છ ભરતકામ અને માતા ની પચેડી જેવી સ્થાનિક હસ્તકલાનું સંરક્ષણ કરવા અને ઉચ્ચ-મૂલ્યવાળી ચીજવસ્તુઓ તરીકે ઓળખ આપવામાં ખુબ જ અસરકારક રહ્યો છે. આ પ્રોજેક્ટ ઇ-કોમર્સ ઓનબોર્ડિંગ, એક્સહિબીશન અને કારીગરો માટે તૈયાર કરાયેલા વિશિષ્ટ પ્લેટફોર્મ દ્વારા બજાર સુધી પહોંચવામાં મદદ કરે છે. પરિણામે, સમર્થિત કારીગરોએ સામૂહિક રીતે ₹100.10 કરોડથી વધુની આવક ઉભી કરી છે, જે કારીગરોની આવક અને આજીવિકામાં સ્પષ્ટ

સુધારો દર્શાવે છે.

હસ્તકલા સેતુ યોજનાએ ધીમે ધીમે લુપ્ત થતી પરંપરાગત હસ્તકલાને ફરી જીવિત કરવામાં મદદ કરી છે, યુવાનોને તેની સંસ્કૃતિ પર ગર્વ લેવા પ્રેરણા આપી છે, અને વિચારશીલ નીતિઓ અને નવીનતા દ્વારા કારીગરોને સમર્થન આપવામાં ગુજરાતને અગ્રેસર તરીકે સ્થાન આપ્યું છે. વાસ્તવિક જીવન પર કેન્દ્રિત સમર્થન સાથે, આ પ્રોજેક્ટ દર્શાવે છે કે સાંસ્કૃતિક વારસો હજારો કારીગરો માટે ગૌરવ, સન્માન અને લાંબા ગાળાની
આજીવિકાનો સ્ત્રોત કેવી રીતે બની શકે છે.

Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: Merouttrakhand
Date: 31 July 2025
Edition: Online
Link: https://merouttrakhand.in/hastkala-setu-yojana-receives-gi-excellence-award-for-promotion-and-tagging-of-handicrafts-in-gujarat-chapter/

देहरादून। हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान , अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को ' जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आईं टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रुप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें।

इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अर्द्रा अग्रवाल (IAS) ने कहा: "गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। 'हस्तकला सेतु योजना' के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है। जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों — विशेष रूप से ईडीआईआई — की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।"

ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने
कहा: "हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह योजना उन्हें केवल कौशल नहीं देती, बल्कि यह भी सिखाती है कि अपनी विरासत को कैसे संरक्षित करें, उद्यमिता कौशलों का उपयोग कैसे

करें, डिजिटल टूल्स कैसे अपनाएं, और एक सफल उद्यमी के रूप में कैसे आगे बढ़ें। भौगोलिक संकेतक उनके कार्य को बाज़ार में वह पहचान और सम्मान दिलाने में अहम भूमिका निभाते हैं, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं। ईडीआईआई में हमें गर्व है कि हम इन शिल्पकारों के इस सफर में सहभागी हैं — एक ऐसा सफर जो उनके शिल्प की रक्षा करता है और साथ ही उनके लिए एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य भी निर्मित करता है। यह पुरस्कार हमें प्रेरित करता है कि हम इस मॉडल को और भी अधिक समुदायों तक पहुंचाएं।"

परियोजना का जी आईं घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है, क्योंकि इसके माध्यम से तंगलिया, रोगन कला, कच्छ कढ़ाई, और माता नी पछेड़ी जैसे पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरक्षित और उच्च-मूल्य उत्पादों के रूप में देश और विदेश दोनों बाज़ारों में पुनःस्थापित किया गया है। यह परियोजना ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर ऑनबोर्डिंग, प्रदर्शनियों, और शिल्पकारों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मों के माध्यम से बाज़ार तक पहुंच को मजबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित शिल्पकारों ने सामूहिक रूप से ₹100.10 करोड़ से अधिक का राजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है।

हस्तकला सेतु योजना ने उन पारंपरिक कलाओं को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसने युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना सिखाया है और गुजरात को शिल्पकार-समर्थक नीतियों और नवाचार के माध्यम से अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय स्तर पर केंद्रित सहयोग के साथ, यह परियोजना दर्शा रही है कि सांस्कृतिक विरासत न केवल सम्मान और गर्व का स्रोत बन सकती है, बल्कि हज़ारों शिल्पकारों के लिए टिकाऊ आजीविका का साधन भी बन सकती है।

Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: Uttarakhand Print Media
Date: 31 July 2025
Edition: Online
Link: https://uttarakhandprintmedia.com/archives/29169

देहरादून : हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान , अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को ' जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आईं टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रुप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें।

इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अर्द्रा अग्रवाल (IAS) ने कहा: "गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। 'हस्तकला सेतु योजना' के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है। जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों — विशेष रूप से ईडीआईआई — की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।"

ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने
कहा: "हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह योजना उन्हें केवल कौशल नहीं देती, बल्कि यह भी सिखाती है कि अपनी विरासत को कैसे संरक्षित करें, उद्यमिता कौशलों का उपयोग कैसे

करें, डिजिटल टूल्स कैसे अपनाएं, और एक सफल उद्यमी के रूप में कैसे आगे बढ़ें। भौगोलिक संकेतक उनके कार्य को बाज़ार में वह पहचान और सम्मान दिलाने में अहम भूमिका निभाते हैं, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं। ईडीआईआई में हमें गर्व है कि हम इन शिल्पकारों के इस सफर में सहभागी हैं — एक ऐसा सफर जो उनके शिल्प की रक्षा करता है और साथ ही उनके लिए एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य भी निर्मित करता है। यह पुरस्कार हमें प्रेरित करता है कि हम इस मॉडल को और भी अधिक समुदायों तक पहुंचाएं।"

परियोजना का जी आईं घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है, क्योंकि इसके माध्यम से तंगलिया, रोगन कला, कच्छ कढ़ाई, और माता नी पछेड़ी जैसे पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरक्षित और उच्च-मूल्य उत्पादों के रूप में देश और विदेश दोनों बाज़ारों में पुनःस्थापित किया गया है। यह परियोजना ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर ऑनबोर्डिंग, प्रदर्शनियों, और शिल्पकारों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मों के माध्यम से बाज़ार तक पहुंच को मजबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित शिल्पकारों ने सामूहिक रूप से ₹100.10 करोड़ से अधिक का राजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है।

हस्तकला सेतु योजना ने उन पारंपरिक कलाओं को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसने युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना सिखाया है और गुजरात को शिल्पकार-समर्थक नीतियों और नवाचार के माध्यम से अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय स्तर पर केंद्रित सहयोग के साथ, यह परियोजना दर्शा रही है कि सांस्कृतिक विरासत न केवल सम्मान और गर्व का स्रोत बन सकती है, बल्कि हज़ारों शिल्पकारों के लिए टिकाऊ आजीविका का साधन भी बन सकती है।

Entrepreneurship Development Institute of India
Ahmedabad

Publication: Arihantsamachar
Date: 31 July 2025
Edition: Online
Link: https://arihantsamachar.com/2025/07/30/hastkala-setu-yojana-receives-gi-excellence-award-for-promotion-and-tagging-of-handicrafts-in-gujarat-chapter/

देहरादून 30 जुलाई । हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आईं टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रुप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें।

इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अर्द्रा अग्रवाल (IAS) ने कहा: "गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। 'हस्तकला सेतु योजना' के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है। जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों — विशेष रूप से ईडीआईआई — की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।"

ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा: "हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह योजना उन्हें केवल कौशल नहीं देती, बल्कि यह भी सिखाती है कि अपनी विरासत को कैसे संरक्षित करें, उद्यमिता कौशलों का उपयोग कैसे करें, डिजिटल टूल्स कैसे अपनाएं, और एक सफल उद्यमी के रूप में कैसे आगे बढ़ें। भौगोलिक संकेतक उनके कार्य को बाज़ार में वह पहचान और सम्मान दिलाने में अहम भूमिका निभाते हैं, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं। ईडीआईआई में हमें गर्व है कि हम इन शिल्पकारों के इस सफर में सहभागी हैं — एक ऐसा सफर जो उनके शिल्प की रक्षा करता है और साथ ही उनके लिए एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य भी निर्मित करता है। यह पुरस्कार हमें प्रेरित करता है कि हम इस मॉडल को और भी अधिक समुदायों तक पहुंचाएं।"

परियोजना का जी आईं घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है, क्योंकि इसके माध्यम से तंगलिया, रोगन कला, कच्छ कढ़ाई, और माता नी पछेड़ी जैसे पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरक्षित और उच्च-मूल्य उत्पादों के रूप में देश और विदेश दोनों बाज़ारों में पुनःस्थापित किया गया है। यह परियोजना ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर ऑनबोर्डिंग, प्रदर्शनियों, और शिल्पकारों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मों के माध्यम से बाज़ार तक पहुंच को मजबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित शिल्पकारों ने सामूहिक रूप से ₹100.10 करोड़ से अधिक का राजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है।

बीवीहस्तकला सेतु योजना ने उन पारंपरिक कलाओं को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसने युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना सिखाया है और गुजरात को शिल्पकार-समर्थक नीतियों और नवाचार के माध्यम से अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय स्तर पर केंद्रित सहयोग के साथ, यह परियोजना दर्शा रही है कि सांस्कृतिक विरासत न केवल सम्मान और गर्व का स्रोत बन सकती है, बल्कि हज़ारों शिल्पकारों के लिए टिकाऊ आजीविका का साधन भी बन सकती है।

Entrepreneurship Development Institute of India
Ahmedabad

Publication: Swastik-mail
Date: 31 July 2025
Edition: Online
Link: https://www.swastik-mail.in/the-hastakala-setu-yojana-received-the-gi-excellence-award-for-promotion-and-tagging-of-handicrafts-in-gujarat-chapter/#google_vignette

हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान , अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को ' जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आईं टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रुप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें।

इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अर्द्रा अग्रवाल (IAS) ने कहा: "गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। 'हस्तकला सेतु योजना' के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है। जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों – विशेष रूप से ईडीआईआई – की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।"

ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा: "हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह योजना उन्हें केवल कौशल नहीं देती, बल्कि यह भी सिखाती है कि अपनी विरासत को कैसे संरक्षित करें, उद्यमिता कौशलों का उपयोग कैसे

करें, डिजिटल टूल्स कैसे अपनाएं, और एक सफल उद्यमी के रूप में कैसे आगे बढ़ें। भौगोलिक संकेतक उनके कार्य को बाज़ार में वह पहचान और सम्मान दिलाने में अहम भूमिका निभाते हैं, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं। ईडीआईआई में हमें गर्व है कि हम इन शिल्पकारों के इस सफर में सहभागी हैं – एक ऐसा सफर जो उनके शिल्प की रक्षा करता है और साथ ही उनके लिए एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य भी निर्मित करता है। यह पुरस्कार हमें प्रेरित करता है कि हम इस मॉडल को और भी अधिक समुदायों तक पहुंचाएं।"

परियोजना का जी आईं घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है, क्योंकि इसके माध्यम से तंगलिया, रोगन कला, कच्छ कढ़ाई, और माता नी पछेड़ी जैसे पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरक्षित और उच्च-मूल्य उत्पादों के रूप में देश और विदेश दोनों बाज़ारों में पुनःस्थापित किया गया है। यह परियोजना ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर ऑनबोर्डिंग, प्रदर्शनियों, और शिल्पकारों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मों के माध्यम से बाज़ार तक पहुंच को मजबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित शिल्पकारों ने सामूहिक रूप से ₹100.10 करोड़ से अधिक का राजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है।

हस्तकला सेतु योजना ने उन पारंपरिक कलाओं को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसने युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना सिखाया है और गुजरात को शिल्पकार-समर्थक नीतियों और नवाचार के माध्यम से अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय स्तर पर केंद्रित सहयोग के साथ, यह परियोजना दर्शा रही है कि सांस्कृतिक विरासत न केवल सम्मान और गर्व का स्रोत बन सकती है, बल्कि हज़ारों शिल्पकारों के लिए टिकाऊ आजीविका का साधन भी बन सकती है।

Entrepreneurship Development Institute of India
Ahmedabad

Publication: The Uttarakhand News
Date: 31 July 2025
Edition: Online
Link:https://theuttarakhandnews.in/%E0%A4%89%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%96%E0%A4%82%E0%A4%A1/the-hastakala-setu-yojana-has-been-awarded-the-gia-excellence-award-gujarat-chapter/

हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान , अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को ' जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आईं टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रुप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें।

इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अर्द्रा अग्रवाल (IAS) ने कहा: "गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। 'हस्तकला सेतु योजना' के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है। जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों — विशेष रूप से ईडीआईआई — की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।

ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा: "हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह योजना उन्हें केवल कौशल नहीं देती, बल्कि यह भी सिखाती है कि अपनी विरासत को कैसे संरक्षित करें, उद्यमिता कौशलों का उपयोग कैसे

करें, डिजिटल टूल्स कैसे अपनाएं, और एक सफल उद्यमी के रूप में कैसे आगे बढ़ें। भौगोलिक संकेतक उनके कार्य को बाज़ार में वह पहचान और सम्मान दिलाने में अहम भूमिका निभाते हैं, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं। ईडीआईआई में हमें गर्व है कि हम इन शिल्पकारों के इस सफर में सहभागी हैं — एक ऐसा सफर जो उनके शिल्प की रक्षा करता है और साथ ही उनके लिए एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य भी निर्मित करता है। यह पुरस्कार हमें प्रेरित करता है कि हम इस मॉडल को और भी अधिक समुदायों तक पहुंचाएं।"

परियोजना का जी आईं घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है, क्योंकि इसके माध्यम से तंगलिया, रोगन कला, कच्छ कढ़ाई, और माता नी पछेड़ी जैसे पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरक्षित और उच्च-मूल्य उत्पादों के रूप में देश और विदेश दोनों बाज़ारों में पुनःस्थापित किया गया है। यह परियोजना ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर ऑनबोर्डिंग, प्रदर्शनियों, और शिल्पकारों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मों के माध्यम से बाज़ार तक पहुंच को मजबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित शिल्पकारों ने सामूहिक रूप से ₹100.10 करोड़ से अधिक का राजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है।

हस्तकला सेतु योजना ने उन पारंपरिक कलाओं को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसने युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना सिखाया है और गुजरात को शिल्पकार-समर्थक नीतियों और नवाचार के माध्यम से अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय स्तर पर केंद्रित सहयोग के साथ, यह परियोजना दर्शा रही है कि सांस्कृतिक विरासत न केवल सम्मान और गर्व का स्रोत बन सकती है, बल्कि हज़ारों शिल्पकारों के लिए टिकाऊ आजीविका का साधन भी बन सकती है।

Entrepreneurship Development Institute of India
Ahmedabad

Publication: lavanyamail
Date: 31 July 2025
Edition: Online
Link: https://lavanyamail.in/the-hastkala-setu-yojana-which-is-an-initiative-of-the-cottage-and-rural-industries-commissionerate-of-the-government-of-gujarat-was-awarded-the-excellence-award-gujarat-chapter/

हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान , अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को ' जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आईं टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रुप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें।

इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अर्द्रा अग्रवाल (IAS) ने कहा: "गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। 'हस्तकला सेतु योजना' के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है। जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों — विशेष रूप से ईडीआईआई — की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।"

ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा: "हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह योजना उन्हें केवल कौशल नहीं देती, बल्कि यह भी सिखाती है कि अपनी विरासत को कैसे संरक्षित करें, उद्यमिता कौशलों का उपयोग कैसे

करें, डिजिटल टूल्स कैसे अपनाएं, और एक सफल उद्यमी के रूप में कैसे आगे बढ़ें। भौगोलिक संकेतक उनके कार्य को बाज़ार में वह पहचान और सम्मान दिलाने में अहम भूमिका निभाते हैं, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं। ईडीआईआई में हमें गर्व है कि हम इन शिल्पकारों के इस सफर में सहभागी हैं — एक ऐसा सफर जो उनके शिल्प की रक्षा करता है और साथ ही उनके लिए एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य भी निर्मित करता है। यह पुरस्कार हमें प्रेरित करता है कि हम इस मॉडल को और भी अधिक समुदायों तक पहुंचाएं।"

परियोजना का जी आईं घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है, क्योंकि इसके माध्यम से तंगलिया, रोगन कला, कच्छ कढ़ाई, और माता नी पछेड़ी जैसे पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरक्षित और उच्च-मूल्य उत्पादों के रूप में देश और विदेश दोनों बाज़ारों में पुनःस्थापित किया गया है। यह परियोजना ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर ऑनबोर्डिंग, प्रदर्शनियों, और शिल्पकारों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मों के माध्यम से बाज़ार तक पहुंच को मजबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित शिल्पकारों ने सामूहिक रूप से ₹100.10 करोड़ से अधिक का राजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है।

हस्तकला सेतु योजना ने उन पारंपरिक कलाओं को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसने युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना सिखाया है और गुजरात को शिल्पकार-समर्थक नीतियों और नवाचार के माध्यम से अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय स्तर पर केंद्रित सहयोग के साथ, यह परियोजना दर्शा रही है कि सांस्कृतिक विरासत न केवल सम्मान और गर्व का स्रोत बन सकती है, बल्कि हज़ारों शिल्पकारों के लिए टिकाऊ आजीविका का साधन भी बन सकती है।

Entrepreneurship Development Institute of India
Ahmedabad

Publication: BusinessNewsmatters
Date: 31 July 2025
Edition: Online
Link: Hastkala Setu Yojana Wins GI Excellence Award Gujarat Chapter for Promotion and Tagging of Handicrafts - Business News Matters

Ahmedabad, 30 July 2025: Hastkala Setu Yojana, an initiative of the Commissionerate of Cottage and Rural Industries (CCRI), Government of Gujarat, and implemented by the **Entrepreneurship Development Institute of India (EDII)**, Ahmedabad, has been conferred with the '**GI Excellence Award Gujarat Chapter'** for Excellence in Promotion and Geographical Indication (GI) Tagging of Handicrafts. The award was conferred during the Conference – 'Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition' held on 18th July 2025, organised by the Intellectual Property Talent Search Examination and the Gujarat National Law University.

This recognition highlights the project's ongoing commitment to preserving Gujarat's traditional crafts, supporting artisans in building sustainable livelihoods, and helping them protect their unique skills while finding new opportunities in today's evolving markets.

Developed as a comprehensive programme to revive the handloom and handicraft sectors of Gujarat, Hastkala Setu Yojana has been instrumental in developing an entrepreneurial ecosystem to strengthen rural and cottage industries of Gujarat. In addition, it has actively worked towards bridging skill, design, and market linkages for rural artisans.

Since its inception in September 2020 across six districts, the project has steadily scaled up to cover all 33 districts of Gujarat, reaching over 34,000 artisans. Through structured training modules, design interventions, branding guidance, and digital marketing handholding, EDII has helped over 11,000 artisans transition from informal setups to formalised enterprises. A growing number of artisans have also been supported in registering their products under the Geographical Indication (GI) framework, enabling them to claim and protect the cultural and economic value of their traditional crafts.

> *Speaking on the achievement,* ***Ms. Ardra Agarwal (IAS), Secretary & Commissioner, Cottage & Rural Industries, Government of Gujarat, said****, "The traditional crafts of Gujarat are deeply woven into the identity of our people and communities. Through Hastkala Setu Yojana, we have not only sought to preserve these traditions but also to enable artisans to thrive in today's dynamic markets. The GI Excellence Award is a proud moment; it validates the government's commitment to artisan-led development. We commend the artisans, mentors, and partners like EDII who are taking our vision forward with dedication."*
>
> ***Dr. Sunil Shukla, Director General, EDII, Said,*** *"What makes Hastkala Setu Yojana truly impactful is its strong connection with the ground realities of artisans. It supports them not just with skills but also helps them understand how to preserve their heritage, employ entrepreneurial competencies, use digital tools, and grow as entrepreneurs. Geographical Indications play a big role in giving their work the identity and respect it deserves in the market. At EDII, we are proud to walk this journey with these artisans, ensuring they not only protect their craft but also build a sustainable future. This award encourages us to take this model to even more communities."*

The GI component of the project has been particularly impactful in repositioning local crafts such as Tangaliya, Rogan art, Kutch embroidery, and Mata ni Pachedi as protected, high-value commodities in both domestic and global markets. The project facilitates market outreach through e-commerce onboarding, exhibitions, and exclusive platforms tailored for artisans. As a result, supported artisans have collectively generated revenues exceeding ₹100.10 crore, marking a visible improvement in artisans' incomes and livelihoods

Hastkala Setu Yojana has helped bring back traditional crafts that were slowly fading, inspired young people to take pride in their heritage, and positioned Gujarat as a frontrunner in supporting artisans through thoughtful policies and innovation. With focused support on the ground, the project is showing how cultural heritage can be a source of dignity, pride, and sustainable livelihoods for thousands of artisans.

Entrepreneurship Development Institute of India
Ahmedabad

Publication: National biz news
Date: 31 July 2025
Edition: Online
Link: Hastkala Setu Yojana Wins GI Excellence Award Gujarat Chapter for Promotion and Tagging of Handicrafts - National Biz News

Ahmedabad, 30 July 2025: Hastkala Setu Yojana, an initiative of the Commissionerate of Cottage and Rural Industries (CCRI), Government of Gujarat, and implemented by the **Entrepreneurship Development Institute of India (EDII)**, Ahmedabad, has been conferred with the '**GI Excellence Award Gujarat Chapter**' for Excellence in Promotion and Geographical Indication (GI) Tagging of Handicrafts. The award was conferred during the Conference – 'Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition' held on 18th July 2025, organised by the Intellectual Property Talent Search Examination and the Gujarat National Law University.

This recognition highlights the project's ongoing commitment to preserving Gujarat's traditional crafts, supporting artisans in building sustainable livelihoods, and helping them protect their unique skills while finding new opportunities in today's evolving markets.

Developed as a comprehensive programme to revive the handloom and handicraft sectors of Gujarat, Hastkala Setu Yojana has been instrumental in developing an entrepreneurial ecosystem to strengthen rural and cottage industries of Gujarat. In addition, it has actively worked towards bridging skill, design, and market linkages for rural artisans.

Since its inception in September 2020 across six districts, the project has steadily scaled up to cover all 33 districts of Gujarat, reaching over 34,000 artisans. Through structured training modules, design interventions, branding guidance, and digital marketing handholding, EDII has helped over 11,000 artisans transition from informal setups to formalised enterprises. A growing number of artisans have also been supported in registering their products under the Geographical Indication (GI) framework, enabling them to claim and protect the cultural and economic value of their traditional crafts.

> Speaking on the achievement, **Ms. Ardra Agarwal (IAS), Secretary & Commissioner, Cottage & Rural Industries, Government of Gujarat, said**, "The traditional crafts of Gujarat are deeply woven into the identity of our people and communities. Through Hastkala Setu Yojana, we have not only sought to preserve these traditions but also to enable artisans to thrive in today's dynamic markets. The GI Excellence Award is a proud moment; it validates the government's commitment to artisan-led development. We commend the artisans, mentors, and partners like EDII who are taking our vision forward with dedication."
>
> **Dr. Sunil Shukla, Director General, EDII, Said,** "What makes Hastkala Setu Yojana truly impactful is its strong connection with the ground realities of artisans. It supports them not just with skills but also helps them understand how to preserve their heritage, employ entrepreneurial competencies, use digital tools, and grow as entrepreneurs. Geographical Indications play a big role in giving their work the identity and respect it deserves in the market. At EDII, we are proud to walk this journey with these artisans, ensuring they not only protect their craft but also build a sustainable future. This award encourages us to take this model to even more communities."

The GI component of the project has been particularly impactful in repositioning local crafts such as Tangaliya, Rogan art, Kutch embroidery, and Mata ni Pachedi as protected, high-value commodities in both domestic and global markets. The project facilitates market outreach through e-commerce onboarding, exhibitions, and exclusive platforms tailored for artisans. As a result, supported artisans have collectively generated revenues exceeding ₹100.10 crore, marking a visible improvement in artisans' incomes and livelihoods

Hastkala Setu Yojana has helped bring back traditional crafts that were slowly fading, inspired young people to take pride in their heritage, and positioned Gujarat as a frontrunner in supporting artisans through thoughtful policies and innovation. With focused support on the ground, the project is showing how cultural heritage can be a source of dignity, pride, and sustainable livelihoods for thousands of artisans.

Entrepreneurship Development Institute of India
Ahmedabad

Publication: Businesshour9
Date: 31 July 2025
Edition: Online
Link: Hastkala Setu Yojana Wins GI Excellence Award Gujarat Chapter for Promotion and Tagging of Handicrafts - National Biz News

Ahmedabad, 30 July 2025: Hastkala Setu Yojana, an initiative of the Commissionerate of Cottage and Rural Industries (CCRI), Government of Gujarat, and implemented by the **Entrepreneurship Development Institute of India (EDII)**, Ahmedabad, has been conferred with the **'GI Excellence Award Gujarat Chapter'** for Excellence in Promotion and Geographical Indication (GI) Tagging of Handicrafts. The award was conferred during the Conference – 'Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition' held on 18th July 2025, organised by the Intellectual Property Talent Search Examination and the Gujarat National Law University.

This recognition highlights the project's ongoing commitment to preserving Gujarat's traditional crafts, supporting artisans in building sustainable livelihoods, and helping them protect their unique skills while finding new opportunities in today's evolving markets.

Developed as a comprehensive programme to revive the handloom and handicraft sectors of Gujarat, Hastkala Setu Yojana has been instrumental in developing an entrepreneurial ecosystem to strengthen rural and cottage industries of Gujarat. In addition, it has actively worked towards bridging skill, design, and market linkages for rural artisans.

Since its inception in September 2020 across six districts, the project has steadily scaled up to cover all 33 districts of Gujarat, reaching over 34,000 artisans. Through structured training modules, design interventions, branding guidance, and digital marketing handholding, EDII has helped over 11,000 artisans transition from informal setups to formalised enterprises. A growing number of artisans have also been supported in registering their products under the Geographical Indication (GI) framework, enabling them to claim and protect the cultural and economic value of their traditional crafts.

> Speaking on the achievement, **Ms. Ardra Agarwal (IAS), Secretary & Commissioner, Cottage & Rural Industries, Government of Gujarat, said**, "The traditional crafts of Gujarat are deeply woven into the identity of our people and communities. Through Hastkala Setu Yojana, we have not only sought to preserve these traditions but also to enable artisans to thrive in today's dynamic markets. The GI Excellence Award is a proud moment; it validates the government's commitment to artisan-led development. We commend the artisans, mentors, and partners like EDII who are taking our vision forward with dedication."
>
> **Dr. Sunil Shukla, Director General, EDII, Said**, "What makes Hastkala Setu Yojana truly impactful is its strong connection with the ground realities of artisans. It supports them not just with skills but also helps them understand how to preserve their heritage, employ entrepreneurial competencies, use digital tools, and grow as entrepreneurs. Geographical Indications play a big role in giving their work the identity and respect it deserves in the market. At EDII, we are proud to walk this journey with these artisans, ensuring they not only protect their craft but also build a sustainable future. This award encourages us to take this model to even more communities."

The GI component of the project has been particularly impactful in repositioning local crafts such as Tangaliya, Rogan art, Kutch embroidery, and Mata ni Pachedi as protected, high-value commodities in both domestic and global markets. The project facilitates market outreach through e-commerce onboarding, exhibitions, and exclusive platforms tailored for artisans. As a result, supported artisans have collectively generated revenues exceeding ₹100.10 crore, marking a visible improvement in artisans' incomes and livelihoods

Hastkala Setu Yojana has helped bring back traditional crafts that were slowly fading, inspired young people to take pride in their heritage, and positioned Gujarat as a frontrunner in supporting artisans through thoughtful policies and innovation. With focused support on the ground, the project is showing how cultural heritage can be a source of dignity, pride, and sustainable livelihoods for thousands of artisans.

Entrepreneurship Development Institute of India
Ahmedabad

Publication: Businessnewsforprofit
Date: 31 July 2025
Edition: Online
Link: Hastkala Setu Yojana Wins GI Excellence Award Gujarat Chapter for Promotion and Tagging of Handicrafts - Business News For Profit

Ahmedabad, 30 July 2025: Hastkala Setu Yojana, an initiative of the Commissionerate of Cottage and Rural Industries (CCRI), Government of Gujarat, and implemented by the **Entrepreneurship Development Institute of India (EDII)**, Ahmedabad, has been conferred with the '**GI Excellence Award Gujarat Chapter**' for Excellence in Promotion and Geographical Indication (GI) Tagging of Handicrafts. The award was conferred during the Conference – 'Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition' held on 18th July 2025, organised by the Intellectual Property Talent Search Examination and the Gujarat National Law University.

This recognition highlights the project's ongoing commitment to preserving Gujarat's traditional crafts, supporting artisans in building sustainable livelihoods, and helping them protect their unique skills while finding new opportunities in today's evolving markets.

Developed as a comprehensive programme to revive the handloom and handicraft sectors of Gujarat, Hastkala Setu Yojana has been instrumental in developing an entrepreneurial ecosystem to strengthen rural and cottage industries of Gujarat. In addition, it has actively worked towards bridging skill, design, and market linkages for rural artisans.

Since its inception in September 2020 across six districts, the project has steadily scaled up to cover all 33 districts of Gujarat, reaching over 34,000 artisans. Through structured training modules, design interventions, branding guidance, and digital marketing handholding, EDII has helped over 11,000 artisans transition from informal setups to formalised enterprises. A growing number of artisans have also been supported in registering their products under the Geographical Indication (GI) framework, enabling them to claim and protect the cultural and economic value of their traditional crafts.

> Speaking on the achievement, **Ms. Ardra Agarwal (IAS), Secretary & Commissioner, Cottage & Rural Industries, Government of Gujarat, said**, "The traditional crafts of Gujarat are deeply woven into the identity of our people and communities. Through Hastkala Setu Yojana, we have not only sought to preserve these traditions but also to enable artisans to thrive in today's dynamic markets. The GI Excellence Award is a proud moment; it validates the government's commitment to artisan-led development. We commend the artisans, mentors, and partners like EDII who are taking our vision forward with dedication."
>
> **Dr. Sunil Shukla, Director General, EDII, Said,** "What makes Hastkala Setu Yojana truly impactful is its strong connection with the ground realities of artisans. It supports them not just with skills but also helps them understand how to preserve their heritage, employ entrepreneurial competencies, use digital tools, and grow as entrepreneurs. Geographical Indications play a big role in giving their work the identity and respect it deserves in the market. At EDII, we are proud to walk this journey with these artisans, ensuring they not only protect their craft but also build a sustainable future. This award encourages us to take this model to even more communities."

The GI component of the project has been particularly impactful in repositioning local crafts such as Tangaliya, Rogan art, Kutch embroidery, and Mata ni Pachedi as protected, high-value commodities in both domestic and global markets. The project facilitates market outreach through e-commerce onboarding, exhibitions, and exclusive platforms tailored for artisans. As a result, supported artisans have collectively generated revenues exceeding ₹100.10 crore, marking a visible improvement in artisans' incomes and livelihoods

Hastkala Setu Yojana has helped bring back traditional crafts that were slowly fading, inspired young people to take pride in their heritage, and positioned Gujarat as a frontrunner in supporting artisans through thoughtful policies and innovation. With focused support on the ground, the project is showing how cultural heritage can be a source of dignity, pride, and sustainable livelihoods for thousands of artisans.

Entrepreneurship Development Institute of India
Ahmedabad

Publication: OnlineMediacafe
Date: 31 July 2025
Edition: Online
Link: Hastkala Setu Yojana Wins GI Excellence Award Gujarat Chapter for Promotion and Tagging of Handicrafts

Ahmedabad, 30 July 2025: Hastkala Setu Yojana, an initiative of the Commissionerate of Cottage and Rural Industries (CCRI), Government of Gujarat, and implemented by the **Entrepreneurship Development Institute of India (EDII)**, Ahmedabad, has been conferred with the '**GI Excellence Award Gujarat Chapter**' for Excellence in Promotion and Geographical Indication (GI) Tagging of Handicrafts. The award was conferred during the Conference – 'Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition' held on 18th July 2025, organised by the Intellectual Property Talent Search Examination and the Gujarat National Law University.

This recognition highlights the project's ongoing commitment to preserving Gujarat's traditional crafts, supporting artisans in building sustainable livelihoods, and helping them protect their unique skills while finding new opportunities in today's evolving markets.

Developed as a comprehensive programme to revive the handloom and handicraft sectors of Gujarat, Hastkala Setu Yojana has been instrumental in developing an entrepreneurial ecosystem to strengthen rural and cottage industries of Gujarat. In addition, it has actively worked towards bridging skill, design, and market linkages for rural artisans.

Since its inception in September 2020 across six districts, the project has steadily scaled up to cover all 33 districts of Gujarat, reaching over 34,000 artisans. Through structured training modules, design interventions, branding guidance, and digital marketing handholding, EDII has helped over 11,000 artisans transition from informal setups to formalised enterprises. A growing number of artisans have also been supported in registering their products under the Geographical Indication (GI) framework, enabling them to claim and protect the cultural and economic value of their traditional crafts.

Speaking on the achievement, ***Ms. Ardra Agarwal (IAS), Secretary & Commissioner, Cottage & Rural Industries, Government of Gujarat, said****, "The traditional crafts of Gujarat are deeply woven into the identity of our people and communities. Through Hastkala Setu Yojana, we have not only sought to preserve these traditions but also to enable artisans to thrive in today's dynamic markets. The GI Excellence Award is a proud moment; it validates the government's commitment to artisan-led development. We commend the artisans, mentors, and partners like EDII who are taking our vision forward with dedication."*

Dr. Sunil Shukla, Director General, EDII, Said, *"What makes Hastkala Setu Yojana truly impactful is its strong connection with the ground realities of artisans. It supports them not just with skills but also helps them understand how to preserve their heritage, employ entrepreneurial competencies, use digital tools, and grow as entrepreneurs. Geographical Indications play a big role in giving their work the identity and respect it deserves in the market. At EDII, we are proud to walk this journey with these artisans, ensuring they not only protect their craft but also build a sustainable future. This award encourages us to take this model to even more communities."*

The GI component of the project has been particularly impactful in repositioning local crafts such as Tangaliya, Rogan art, Kutch embroidery, and Mata ni Pachedi as protected, high-value commodities in both domestic and global markets. The project facilitates market outreach through e-commerce onboarding, exhibitions, and exclusive platforms tailored for artisans. As a result, supported artisans have collectively generated revenues exceeding ₹100.10 crore, marking a visible improvement in artisans' incomes and livelihoods

Hastkala Setu Yojana has helped bring back traditional crafts that were slowly fading, inspired young people to take pride in their heritage, and positioned Gujarat as a frontrunner in supporting artisans through thoughtful policies and innovation. With focused support on the ground, the project is showing how cultural heritage can be a source of dignity, pride, and sustainable livelihoods for thousands of artisans.

Entrepreneurship Development Institute of India
Ahmedabad

Publication: Business Newsweek
Date: 31 July 2025
Edition: Online
Link: Hastkala Setu Yojana Wins GI Excellence Award Gujarat Chapter for Promotion and Tagging of Handicrafts - Business News Week

Ahmedabad, 30 July 2025: Hastkala Setu Yojana, an initiative of the Commissionerate of Cottage and Rural Industries (CCRI), Government of Gujarat, and implemented by the **Entrepreneurship Development Institute of India (EDII)**, Ahmedabad, has been conferred with the '**GI Excellence Award Gujarat Chapter'** for Excellence in Promotion and Geographical Indication (GI) Tagging of Handicrafts. The award was conferred during the Conference – 'Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition' held on 18th July 2025, organised by the Intellectual Property Talent Search Examination and the Gujarat National Law University.

This recognition highlights the project's ongoing commitment to preserving Gujarat's traditional crafts, supporting artisans in building sustainable livelihoods, and helping them protect their unique skills while finding new opportunities in today's evolving markets.

Developed as a comprehensive programme to revive the handloom and handicraft sectors of Gujarat, Hastkala Setu Yojana has been instrumental in developing an entrepreneurial ecosystem to strengthen rural and cottage industries of Gujarat. In addition, it has actively worked towards bridging skill, design, and market linkages for rural artisans.

Since its inception in September 2020 across six districts, the project has steadily scaled up to cover all 33 districts of Gujarat, reaching over 34,000 artisans. Through structured training modules, design interventions, branding guidance, and digital marketing handholding, EDII has helped over 11,000 artisans transition from informal setups to formalised enterprises. A growing number of artisans have also been supported in registering their products under the Geographical Indication (GI) framework, enabling them to claim and protect the cultural and economic value of their traditional crafts.

> *Speaking on the achievement, **Ms. Ardra Agarwal (IAS), Secretary & Commissioner, Cottage & Rural Industries, Government of Gujarat, said**, "The traditional crafts of Gujarat are deeply woven into the identity of our people and communities. Through Hastkala Setu Yojana, we have not only sought to preserve these traditions but also to enable artisans to thrive in today's dynamic markets. The GI Excellence Award is a proud moment; it validates the government's commitment to artisan-led development. We commend the artisans, mentors, and partners like EDII who are taking our vision forward with dedication."*

***Dr. Sunil Shukla, Director General, EDII, Said,** "What makes Hastkala Setu Yojana truly impactful is its strong connection with the ground realities of artisans. It supports them not just with skills but also helps them understand how to preserve their heritage, employ entrepreneurial competencies, use digital tools, and grow as entrepreneurs. Geographical Indications play a big role in giving their work the identity and respect it deserves in the market. At EDII, we are proud to walk this journey with these artisans, ensuring they not only protect their craft but also build a sustainable future. This award encourages us to take this model to even more communities."*

The GI component of the project has been particularly impactful in repositioning local crafts such as Tangaliya, Rogan art, Kutch embroidery, and Mata ni Pachedi as protected, high-value commodities in both domestic and global markets. The project facilitates market outreach through e-commerce onboarding, exhibitions, and exclusive platforms tailored for artisans. As a result, supported artisans have collectively generated revenues exceeding ₹100.10 crore, marking a visible improvement in artisans' incomes and livelihoods

Hastkala Setu Yojana has helped bring back traditional crafts that were slowly fading, inspired young people to take pride in their heritage, and positioned Gujarat as a frontrunner in supporting artisans through thoughtful policies and innovation. With focused support on the ground, the project is showing how cultural heritage can be a source of dignity, pride, and sustainable livelihoods for thousands of artisans.

Entrepreneurship Development Institute of India
Ahmedabad

Publication: Siddhant Samachar
Date: 01 August 2025
Edition: Mumbai
Page: 02

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय (सीसीआरआई) की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (ईडीआईआई), अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार–प्रसार और भौगोलिक संकेतक (Geographical Indication – जीआई) टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' (Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition) के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा (Intellectual Property Talent Search Examination) और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिजाइन और बाजार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। सितंबर 2020 में छह जिलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 जिलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिजाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रूप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक (जीआई) फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें। इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अर्द्रा अग्रवाल (आईएएस) ने कहा: "गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची–बसी हैं। 'हस्तकला सेतु योजना' के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाजारों में सफल बनाने का भी रहा है। जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है यह सरकार की शिल्पकार– केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों — विशेष रूप से ईडीआईआई—की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।" ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा: "हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह योजना उन्हें केवल कौशल नहीं देती, बल्कि यह भी सिखाती है कि अपनी विरासत को कैसे संरक्षित करें, उद्यमिता कौशलों का उपयोग कैसे करें, डिजिटल टूल्स कैसे अपनाएं, और एक सफल उद्यमी के रूप में कैसे आगे बढ़ें। भौगोलिक संकेतक (जीआई) उनके कार्य को बाजार में वह पहचान और सम्मान दिलाने में अहम भूमिका निभाते हैं, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं। ईडीआईआई में हमें गर्व है कि हम इन शिल्पकारों के इस सफर में सहभागी हैं — एक ऐसा सफर जो उनके शिल्प की रक्षा करता है और साथ ही उनके लिए एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य भी निर्मित करता है। यह पुरस्कार हमें प्रेरित करता है कि हम इस मॉडल को और भी अधिक समुदायों तक पहुंचाएं।" परियोजना का जीआई घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है, क्योंकि इसके माध्यम से तंगलिया, रोगन कला, कच्छ कढ़ाई, और माता नी पछेड़ी जैसे पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरक्षित और उच्च–मूल्य उत्पादों के रूप में देश और विदेश दोनों बाजारों में पुनःस्थापित किया गया है। यह परियोजना ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर ऑनबोर्डिंग, प्रदर्शनियों, और शिल्पकारों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मों के माध्यम से बाजार तक पहुंच को मजबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित शिल्पकारों ने सामूहिक रूप से 100. 10 करोड़ से अधिक का राजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है। हस्तकला सेतु योजना ने उन पारंपरिक कलाओं को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो धीरे–धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसने युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना सिखाया है और गुजरात को शिल्पकार–समर्थक नीतियों और नवाचार के माध्यम से अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय स्तर पर केंद्रित सहयोग के साथ, यह परियोजना दर्शा रही है कि सांस्कृतिक विरासत न केवल सम्मान और गर्व का स्रोत बन सकती है, बल्कि हजारों शिल्पकारों के लिए टिकाऊ आजीविका का साधन भी बन सकती है।

Publication: Canon Times
Date: 01 August 2025
Edition: Bhopal
Page: 06

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए GI एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

Canon Times, Bureau

31 जुलाई 2025, अहमदाबाद- हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय (CCRI) की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (EDII), अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'लह्ळ एक्सीलेंस अवॉर्ड ङ्क गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक (Geographical Indication - GI) टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' (Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition) के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा (Intellectual Property Talent Search E&amination) और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से EDII ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रुप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक (GI) फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें।इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री आर्द्रा अग्रवाल (IAS) ने कहा- -गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। हस्तकला सेतु योजना के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है।

Entrepreneurship Development Institute of India
Ahmedabad

Publication: Dainik Aditya Bharat
Date: 01 August 2025
Edition: Bhopal
Page: 02

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार

टैगिंग के लिए GI एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

एजेंसी ● अहमदाबाद

हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय (CCRI) की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (EDII), अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'GI एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक (Geographical Indication – GI) टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' (Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition) के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा (Intellectual Property Talent Search Examination) और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

योगदान

गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिजाइन और बाजार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। सितंबर 2020 में छह जिलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 जिलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिजाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से EDII ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकालकर औपचारिक उद्यमों के रूप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक (GI) फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें।

इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अर्द्रा अग्रवाल (IAS) ने कहा: 'गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। 'हस्तकला सेतु योजना' के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाजारों में सफल बनाने का भी रहा है। GI एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों विशेष रूप से EDII की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।" EDII के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा: 'हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है।

GI घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है

परियोजना का GI घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है, क्योंकि इसके माध्यम से तंगलिया, रोगन कला, कच्छ कढ़ाई, और माता नी पछेड़ी जैसे पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरक्षित और उच्च-मूल्य उत्पादों के रूप में देश और विदेश दोनों बाजारों में पुनःस्थापित किया गया है। यह परियोजना ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर ऑनबोर्डिंग, प्रदर्शनियों, और शिल्पकारों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मों के माध्यम से बाजार तक पहुंच को मजबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित शिल्पकारों ने सामूहिक रूप से ₹100.10 करोड़ से अधिक का राजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है।

महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है

हस्तकला सेतु योजना ने उन पारंपरिक कलाओं को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसने युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना सिखाया है और गुजरात को शिल्पकार-समर्थक नीतियों और नवाचार के माध्यम से अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय स्तर पर केंद्रित सहयोग के साथ, यह परियोजना दर्शा रही है कि सांस्कृतिक विरासत न केवल सम्मान और गर्व का स्रोत बन सकती है, बल्कि हजारों शिल्पकारों के लिए टिकाऊ आजीविका का साधन भी बन सकती है।

Entrepreneurship Development Institute of India
Ahmedabad

Publication: Manch Manthan
Date: 01 August 2025
Edition: Bhopal
Page: 01

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए GI एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

मंच मंथन, आशीष श्रीवास्तव

अहमदाबाद हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय (CCRI) की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (EDII), अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'लठ्ठ एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक (Geographical Indication - GI) टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्क्लेव 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' (Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition) के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा (Intellectual Property Talent Search E&amination) और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों की टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। सितंबर 2020 में छह जिलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 जिलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से EDII ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रूप में विकसित होने में सहायता की है.

Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: Samay Jagat
Date: 01 August 2025
Edition: Bhopal
Page: 09

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

एजेंसी | नई दिल्ली

हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'GI एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। सितंबर 2020 में छह जिलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 जिलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से EDII ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रुप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक (GI) फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें। इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अद्रा अग्रवाल (IAS) ने कहा गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। हस्तकला सेतु योजना के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है। GI एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों – विशेष रूप से EDII – की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। EDII के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने कहा- हस्तकला सेतु योजना को वास्तव में प्रभावशाली बनाने वाली बात यह है कि यह शिल्पकारों की जमीनी वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ी हुई है। यह योजना उन्हें केवल कौशल नहीं देती, बल्कि यह भी सिखाती है कि अपनी विरासत को कैसे संरक्षित करें, उद्यमिता कौशलों का उपयोग कैसे करें, डिजिटल टूल्स कैसे अपनाएं, और एक सफल उद्यमी के रूप में कैसे आगे बढ़ें। भौगोलिक संकेतक (GI) उनके कार्य को बाज़ार में वह पहचान और सम्मान दिलाने में अहम भूमिका निभाते हैं, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं। EDII में हमें गर्व है कि हम इन शिल्पकारों के इस सफर में सहभागी हैं – एक ऐसा सफर जो उनके शिल्प की रक्षा करता है और साथ ही उनके लिए एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य भी निर्मित करता है। यह पुरस्कार हमें प्रेरित करता है कि हम इस मॉडल को और भी अधिक समुदायों तक पहुंचाएं। परियोजना का GI घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है, क्योंकि इसके माध्यम से तंगलिया, रोगन कला, कच्छ कढ़ाई, और माता नी पछेड़ी जैसे पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरक्षित और उच्च-मूल्य उत्पादों के रूप में देश और विदेश दोनों बाज़ारों में पुनःस्थापित किया गया है। यह परियोजना ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर ऑनबोर्डिंग, प्रदर्शनियों, और शिल्पकारों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मों के माध्यम से बाज़ार तक पहुंच को मजबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित शिल्पकारों ने सामूहिक रूप से ?100.10 करोड़ से अधिक का राजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है। हस्तकला सेतु योजना ने उन पारंपरिक कलाओं को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसने युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना सिखाया है और गुजरात को शिल्पकार-समर्थक नीतियों और नवाचार के माध्यम से अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय स्तर पर केंद्रित सहयोग के साथ, यह परियोजना दर्शा रही है कि सांस्कृतिक विरासत न केवल सम्मान और गर्व का स्रोत बन सकती है, बल्कि हजारों शिल्पकारों के लिए टिकाऊ आजीविका का साधन भी बन सकती है।

Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: Swadesh
Date: 01 August 2025
Edition: Bhopal
Page: 10

हस्तकला सेतु योजना को मिला जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

एजेंसी, अहमदाबाद

हस्तकला सेतु योजना जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: Hari Bhoomi
Date: 02 August 2025
Edition: Bhopal
Page: 07

हस्तकला सेतु योजना को मिला जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड

अहमदाबाद। हस्तकला सेतु योजना जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान , अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: Aam Sabha
Date: 02 August 2025
Edition: Bhopal
Page: 01

हस्तकला सेतु योजना को मिला जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड

आम सभा, अहमदाबाद। गुजरात सरकार की हस्तकला सेतु योजना को राज्य की पारंपरिक शिल्पकला के संरक्षण एवं त्तढ्ढ टैगिंग के माध्यम से शिल्पकारों को सशक्त बनाने के लिए त्तढ्ढ एक्सीलेंस अवॉर्ड - गुजरात चैप्टर से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी और ढ्ढक्कस्थ द्वारा आयोजित सम्मेलन के दौरान प्रदान किया गया। योजना के अंतर्गत अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों को जोड़ा गया है और ?100 करोड़ से अधिक का कारोबार हुआ है। योजना का संचालन ष्टष्टत्रढ्ढ तथा कार्यान्वयन श्वष्ठढ्ढढ्ढ द्वारा किया जा रहा है।

Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: Sach Express
Date: 02 August 2025
Edition: Bhopal
Page: 06

हस्तकला सेतु योजना को मिला जीआईएक्सीलेंस अवॉर्ड

सच प्रतिनिधि ॥ भोपाल

हस्तकला सेतु योजना जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान , अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'जीआई एक्सीलेंस अवॉर्ड गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: Fine Times
Date: 03 August 2025
Edition: Bhopal
Page: 07

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए GI एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

अहमदाबाद। हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय (CCRI) की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (EDII), अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'GI एक्सीलेंस अवॉर्ड - गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक (Geographical Indication- GI) टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

Entrepreneurship Development Institute of India Ahmedabad

Publication: Fine Times
Date: 03 August 2025
Edition: Bhopal
Page: 07

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए GI एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

अहमदाबाद। हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय (CCRI) की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (EDII), अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'GI एक्सीलेंस अवॉर्ड - गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक (Geographical Indication- GI) टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

Entrepreneurship Development Institute of India
Ahmedabad

Publication: Mp18news
Date: 05 August 2025
Edition: Online
Link: https://mp18news.com/news.php?id=hastkala-setu-yojana-receives-gi-excellence-award-for-promotion-and-tagging-of-handicrafts-in-gujarat-chapter-568702

अहमदाबाद: हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय (CCRI) की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (EDII), अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'GI एक्सीलेंस अवॉर्ड – गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार-प्रसार और भौगोलिक संकेतक (Geographical Indication – GI) टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' (Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition) के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा (Intellectual Property Talent Search Examination) और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से EDII ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रूप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक (GI) फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें।

इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अर्द्रा अग्रवाल (IAS) ने कहा: "गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची-बसी हैं। 'हस्तकला सेतु योजना' के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है। GI एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार-केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों — विशेष रूप से EDII — की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।"

Entrepreneurship Development Institute of India
Ahmedabad

Publication: Bharat Vichar
Date: 31 July 2025
Edition: Dehradun
Page: 06

हस्तकला सेतु योजना को गुजरात चैप्टर में हस्तशिल्प के प्रचार और टैगिंग के लिए जी आई एक्सीलेंस अवॉर्ड मिला

देहरादून– हस्तकला सेतु योजना, जो कि गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग आयुक्तालय की एक पहल है और जिसे भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है, को 'जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड ङ्क गुजरात चैप्टर' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हस्तशिल्प के प्रचार–प्रसार और भौगोलिक संकेतक जी आईं टैगिंग में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया। यह पुरस्कार 18 जुलाई 2025 को आयोजित कॉन्फ्रेंस 'आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक पहचान के लिए जीआई का उपयोग' के दौरान प्रदान किया गया, जिसका आयोजन बौद्धिक संपदा प्रतिभा खोज परीक्षा और गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था।

यह सम्मान गुजरात की पारंपरिक हस्तकलाओं के संरक्षण, शिल्पकारों को टिकाऊ आजीविका के निर्माण में समर्थन देने, तथा उनकी विशिष्ट कला को संरक्षित रखते हुए उन्हें बदलते बाजारों में नए अवसर दिलाने के प्रति इस परियोजना की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। गुजरात के हथकरघा और हस्तकला क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से विकसित की गई, हस्तकला सेतु योजना एक समग्र कार्यक्रम है, जो राज्य के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता आधारित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके साथ ही, यह योजना ग्रामीण शिल्पकारों के लिए कौशल, डिज़ाइन और बाज़ार से जुड़ाव की खाई पाटने की दिशा में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

सितंबर 2020 में छह ज़िलों से आरंभ हुई हस्तकला सेतु योजना ने निरंतर विस्तार करते हुए आज गुजरात के सभी 33 ज़िलों को कवर कर लिया है, और अब तक 34,000 से अधिक शिल्पकारों तक पहुंच बनाई है। संरचित प्रशिक्षण मॉड्यूल, डिज़ाइन हस्तक्षेप, ब्रांडिंग मार्गदर्शन, और डिजिटल मार्केटिंग में सहयोग के माध्यम से ईडीआईआई ने 11,000 से अधिक शिल्पकारों को अनौपचारिक प्रणाली से निकलकर औपचारिक उद्यमों के रूप में विकसित होने में सहायता की है साथ ही, कई शिल्पकारों को अपने उत्पादों को भौगोलिक संकेतक फ्रेमवर्क के तहत पंजीकृत कराने में सहयोग प्रदान किया गया है, जिनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, ताकि वे अपनी पारंपरिक कलाओं के सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्य की पहचान और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें। इस उपलब्धि पर बोलते हुए, गुजरात सरकार के कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग विभाग की सचिव एवं आयुक्त सुश्री अर्दी अग्रवाल (IAS) ने कहा- गुजरात की पारंपरिक कलाएं हमारे लोगों और समुदायों की पहचान में गहराई से रची–बसी हैं। हस्तकला सेतु योजना के माध्यम से हमारा प्रयास केवल इन परंपराओं को संरक्षित करने का नहीं, बल्कि शिल्पकारों को आज के बदलते बाज़ारों में सफल बनाने का भी रहा है। जी आईं एक्सीलेंस अवॉर्ड हमारे लिए गर्व का क्षण है; यह सरकार की शिल्पकार–केन्द्रित विकास प्रतिबद्धता को मान्यता देता है। हम उन सभी शिल्पकारों, मेंटर्स और साझेदारों – विशेष रूप से ईडीआईआई – की सराहना करते हैं जो इस दृष्टिकोण को निष्ठा के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। भौगोलिक संकेतक उनके कार्य को बाज़ार में वह पहचान और सम्मान दिलाने में अहम भूमिका निभाते हैं, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं। ईडीआईआई में हमें गर्व है कि हम इन शिल्पकारों के इस सफर में सहभागी हैं – एक ऐसा सफर जो उनके शिल्प की रक्षा करता है और साथ ही उनके लिए एक टिकाऊ और समृद्ध भविष्य भी निर्मित करता है। यह पुरस्कार हमें प्रेरित करता है कि हम इस मॉडल को और भी अधिक समुदायों तक पहुंचाएं। परियोजना का जी आईं घटक विशेष रूप से प्रभावशाली रहा है, क्योंकि इसके माध्यम से तंगलिया, रोगन कला, कच्छकढ़ाई, और माता नी पछेड़ी जैसे पारंपरिक स्थानीय शिल्पों को सुरक्षित और उच्च–मूल्य उत्पादों के रूप में देश और विदेश दोनों बाज़ारों में पुनःस्थापित किया गया है। यह परियोजना ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर ऑनबोर्डिंग, प्रदर्शनियों, और शिल्पकारों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए प्लेटफार्मों के माध्यम से बाज़ार तक पहुंच को मजबूत बनाती है। इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह रहा है कि समर्थित शिल्पकारों ने सामूहिक रूप से ?100.10 करोड़ से अधिक का राजस्व उत्पन्न किया है, जिससे उनकी आय और आजीविका में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है।

हस्तकला सेतु योजना ने उन पारंपरिक कलाओं को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो धीरे–धीरे विलुप्त होती जा रही थीं। इसने युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना सिखाया है और गुजरात को शिल्पकार–समर्थक नीतियों और नवाचार के माध्यम से अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित किया है। स्थानीय स्तर पर केंद्रित सहयोग के साथ, यह परियोजना दर्शा रही है कि सांस्कृतिक विरासत न केवल सम्मान और गर्व का स्रोत बन सकती है, बल्कि हज़ारों शिल्पकारों के लिए टिकाऊ आजीविका का साधन भी बन सकती है।

Entrepreneurship Development Institute of India
Ahmedabad

Publication: Jagran Junction
Date: 31 July 2025
Edition: Mumbai
Page: 08

Hastkala Setu Yojana Wins GI Excellence Award - Gujarat Chapter for Promotion and Tagging of Handicrafts

MUMBAI | Hastkala Setu Yojana, an initiative of the Commissionerate of Cottage and Rural Industries (CCRI), Government of Gujarat, and implemented by the Entrepreneurship Development Institute of India (EDII), Ahmedabad, has been conferred with the 'GI Excellence Award - Gujarat Chapter' for Excellence in Promotion and Geographical Indication (GI) Tagging of Handicrafts. The award was conferred during the Conference – 'Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition' held on 18th July 2025, organised by the Intellectual Property Talent Search Examination and the Gujarat National Law University.

This recognition highlights the project's ongoing commitment to preserving Gujarat's traditional crafts, supporting artisans in building sustainable livelihoods, and helping them protect their unique skills while finding new opportunities in today's evolving markets.

Developed as a comprehensive programme to revive the handloom and handicraft sectors of Gujarat, Hastkala Setu Yojana has been instrumental in developing an entrepreneurial ecosystem to strengthen rural and cottage industries of Gujarat. In addition, it has actively worked towards bridging skill, design, and market linkages for rural artisans.

Entrepreneurship Development Institute of India
Ahmedabad

Publication: APN NEWS
Date:31 July 2025
Edition: Online
Link: https://www.apnnews.com/hastkala-setu-yojana-wins-gi-excellence-award-gujarat-chapter-for-promotion-and-tagging-of-handicrafts/

Ahmedabad: Hastkala Setu Yojana, an initiative of the Commissionerate of Cottage and Rural Industries (CCRI), Government of Gujarat, and implemented by the Entrepreneurship Development Institute of India (EDII), Ahmedabad, has been conferred with the 'GI Excellence Award – Gujarat Chapter' for Excellence in Promotion and Geographical Indication (GI) Tagging of Handicrafts. The award was conferred during the Conference – 'Leveraging GI for Economic Growth, Cultural Preservation, and Global Recognition' held on 18th July 2025, organised by the Intellectual Property Talent Search Examination and the Gujarat National Law University.

This recognition highlights the project's ongoing commitment to preserving Gujarat's traditional crafts, supporting artisans in building sustainable livelihoods, and helping them protect their unique skills while finding new opportunities in today's evolving markets.

Developed as a comprehensive programme to revive the handloom and handicraft sectors of Gujarat, Hastkala Setu Yojana has been instrumental in developing an entrepreneurial ecosystem to strengthen rural and cottage industries of Gujarat. In addition, it has actively worked towards bridging skill, design, and market linkages for rural artisans.

Since its inception in September 2020 across six districts, the project has steadily scaled up to cover all 33 districts of Gujarat, reaching over 34,000 artisans. Through structured training modules, design interventions, branding guidance, and digital marketing handholding, EDII has helped over 11,000 artisans transition from informal setups to formalised enterprises. A growing number of artisans have also been supported in registering their products under the Geographical Indication (GI) framework, enabling them to claim and protect the cultural and economic value of their traditional crafts.

Speaking on the achievement, Ms. Ardra Agarwal (IAS), Secretary & Commissioner, Cottage & Rural Industries, Government of Gujarat, said, "The traditional crafts of Gujarat are deeply woven into the identity of our people and communities. Through Hastkala Setu Yojana, we have not only sought to preserve these traditions but also to enable artisans to thrive in today's dynamic markets. The GI Excellence Award is a proud moment; it validates the government's commitment to artisan-led development. We commend the artisans, mentors, and partners like EDII who are taking our vision forward with dedication."

Dr. Sunil Shukla, Director General, EDII, Said, “What makes Hastkala Setu Yojana truly impactful is its strong connection with the ground realities of artisans. It supports them not just with skills but also helps them understand how to preserve their heritage, employ entrepreneurial competencies, use digital tools, and grow as entrepreneurs. Geographical Indications play a big role in giving their work the identity and respect it deserves in the market. At EDII, we are proud to walk this journey with these artisans, ensuring they not only protect their craft but also build a sustainable future. This award encourages us to take this model to even more communities.”

The GI component of the project has been particularly impactful in repositioning local crafts such as Tangaliya, Rogan art, Kutch embroidery, and Mata ni Pachedi as protected, high-value commodities in both domestic and global markets. The project facilitates market outreach through e-commerce onboarding, exhibitions, and exclusive platforms tailored for artisans. As a result, supported artisans have collectively generated revenues exceeding ₹100.10 crore, marking a visible improvement in artisans’ incomes and livelihoods

Hastkala Setu Yojana has helped bring back traditional crafts that were slowly fading, inspired young people to take pride in their heritage, and positioned Gujarat as a frontrunner in supporting artisans through thoughtful policies and innovation. With focused support on the ground, the project is showing how cultural heritage can be a source of dignity, pride, and sustainable livelihoods for thousands of artisans.